P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मेवाड़ लघुचित्र शैली एवं उसमें अश्वों का कलात्मक अंकन

सारांश

राजस्थान का मेवाड़ प्रांत प्राचीन समय से ही कलाओं का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। राजस्थानी चित्रकला के उद्भव, विकास तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन में मेवाड़ शैली का प्रमुख हाथ रहा है। प्रारम्भिक राजस्थान के चित्र मेवाड़ शैली से ही सम्बन्धित हैं। अतः मेवाड़ में परिपोषित चित्रकला मेवाड़ शैली के नाम से प्रख्यात है जिससे राजस्थान की विभिन्न चित्रशैलियों का विकास हुआ है।[1]

मुख्य शब्द : मेवाड़ चित्रकला,अश्वों का कलात्मक अंकन

मनीषा खींची
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

इशरत उल्लाह खान
एसोसिएट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

मेवाड़ चित्रकला के प्रारंभिक चित्र 1260 ई. में गुहिलवंषिय तेजसिंह के समय में निर्मित **''सावग–पड़िक्क मणसुत्त चुन्नी'' (श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूणी)** माना जाता है। इसके पश्चात् द्वतीय प्राचीन उदाहरण **''सुपासनाहचरियम्'' (सुपार्श्वनाथ चरितम्)** है जो 1422–1423 के आस पास मोकल के शासन काल में देवकुल पाठक (देलवाड़ा–समीपस्थ उदयपुर) नामक स्थान पर लिखित एवं चित्रित हुआ था। इसके अतिरिक्त मेवाड़ शैली के चित्र ग्रंथों पर आधारित मिलते हैं। मेवाड़ शैली के अधिकांश आरंभिक चित्रों के विषय मुख्य रूप से कृष्ण भक्ति या वैष्णव वाद पर आधारित रहे हैं जिसका प्रमुख कारण नाथद्वारा में श्रीनाथ जी का विग्रह माना जाता है। महाराणा राजसिंह ने इन्हे औरगंजेब की हिन्दू धर्म विरोधी नीति की परवाह किए बगैर गुप्त रूप से ब्रज से नाथद्वारा में स्थापित किया गया था। इस कारण मेवाड़ शैली में नाथद्वारा के चित्रों में श्रीनाथजी से सम्बन्धित कथाओं, कहानियों, श्रृंगार, मनोरथ, पिछवाईयों, भोगों आदि पर आधारित चित्रांकन अधिक दिखाई देता है। मेवाड़ चित्रशैली के अन्य प्रमुख केन्द्रों में उदयपुर, चांवड़ और चित्तौड़ को माना जाता है।

सतिथि एवं चित्रित पाण्डुलिपियों के आधार पर इस शैली की परम्परा सोलहवीं शती के उत्तरार्द्ध में स्वतंत्र रूप से विकसित होने के प्रमाण स्पष्ट रूप से सामने आते है। इस समय मध्य भारत शैली का भी विकास हो रहा था तथा मुगल शैली की स्थापना लगभग हो चुकी थी। अतः उसके समान्तर मेवाड़ शैली में भी उसके अंश दिखाई देने लगते हैं। वैसे तो यहां के महाराणाओं ने मुगल अधीनता स्वीकार नहीं की थी परन्तु अमर सिंह (1597–1620 ई.) प्रथम ऐसे शासक हुये थे जिन्होने मुगल अधीनता को स्वीकार किया था और उसके पश्चात् मेवाड़ की चित्रकला पर भी मुगल प्रभाव आने लग जाता है।[2] मेवाड़ शैली के चित्र विषयों में रामायण, भागवत, गीत गोविन्द, कल्पसूत्र, रसिकप्रिया, काव्य प्रिया, नायक नायिका भेद आदि धार्मिक ग्रंथों के अलावा तात्कालीन राजपूती रीति–रिवाजों, ग्रामीण जन–जीवन, दरबारी दृष्यों जुलूस, विवाह, नृत्य, संगीत, महलों के आंतरिक जीवन, युद्ध–आखेट आदि का प्रभावपूर्ण चित्रण उपलब्ध होता है। वहीं यहाँ पशु पक्षियों का अंकन प्राचीन अपभ्रंश शैली की परंपरा में हुआ मिलता है। यद्यपि आगे जाके उसमें मुगल प्रभाव से कुछ स्वाभाविकता आने लग जाती है। विषेषतः हाथी एवं अश्वों का अंकन शाहजहां–कालीन मुगल शैली से अधिक प्रभावित है। [3]

मेवाड़ सदैव ही अपनी वीरता एवं पराक्रम में अग्रणी रहा है इसलिए चित्रशैली में भी चित्रकारों ने आखेट एवं पशु चित्रण को भी महत्व देते हुए उनका बहुलता के साथ चित्रण किया है। यहां पशुओं का चित्रण लगभग सभी प्रकार के चित्रों मे दिखाई देता है। सभी महाराणाओं ने अपने दैनिक कार्यक्रम में शिकार को महत्व दिया ही है जो एक प्रकार से युद्ध आदि का खेल के साथ प्रशिक्षण होता था। इसमें शेर, भालू, चीतें, शावक व हिरण का शिकार आदि महाराजाओं, जागीरदारों एवं सामंतों के प्रिय विषय रहे हैं। शिकार सम्बन्धी चित्रों

के निर्माण में मेवाड़ शैली में महाराजा अरिसिंह के समय मे निर्मित चित्र प्रमुख रूप से दर्शनीय है इनके राज्यकाल में इस विषय से सम्बन्धित चित्रों का अधिक निर्माण हुआ है।[4]

चित्र सं. 1 महाराणा अरिसिंह का भाले द्वारा काले हिरण का शिकार करते हुए, 1761–1773 ई.वी, मेवाड़ चित्र शैली

ऐसा ही एक चित्र महाराणा अरिसिंह का भाले द्वारा काले हिरण का शिकार करते हुए (1761–1773) हैं जो मेवाड़ राज प्रसाद संग्रहालय उदयपुर की कला दीर्धा में सुरक्षित है।[5] इस चित्र में महाराणा अरिसिंह को एक लम्बे भाले द्वारा काले हिरण का शिकार करते हुए चित्रित किया गया है। महाराणा को अपने प्रिय अश्व ''चेतक'' पर सवार शिकार में व्यस्त दर्शाया गया है। उन्होंने अपने अश्व का नाम महाराणा प्रताप के प्रसिद्ध अश्व चेतक जो1576 में हल्दीघाटी में शहीद हुआ था, से प्रेरित होकर रखा था।[6]

सम्पूर्ण चित्र गतिशील व स्फूर्तिपूर्ण अवस्था में चित्रित है। चित्रकार ने इस चित्र संयोजन को, महाराणा, उनके अश्व चेतक, दो काले हिरणों व एक श्वान द्वारा पूर्ण किया है।चित्र के मुख्य भाग में अश्वारूढ़ महाराणा द्वारा एक हिरण का शिकार किया जा रहा है। वहीं दांयी ओर एक श्वान एक अन्य हिरण को नौंचता हुआ चित्रित है। यह चित्र संयोजन मेवाड़ शैली के शिकार दृश्य चित्रों का एक उत्कृष्ट नमूना कहा जा सकता है। महाराणा अरिसिंह के अश्व को चित्रकार ने सलेटी रंग की पृष्ठभूमि पर किंचित सफेद बिन्दुओं के चित्रण द्वारा पूर्ण किया है। यह अश्व पूर्ण रूप से शाही अलंकरणों द्वारा सुसज्जित है जिसमें सुनहरे रंग का प्रयोग है जोकि मेवाड़ चित्रशैली की एक प्रमुख विशेषता है। अश्व की मुख मुद्रा, आंख, कान, पूछ, ग्रीवा, मनोभाव, स्थिति, आकृति रचना आदि सभी को बहुत ही गहनतापूर्वक चित्रित करने का प्रयास इस चित्र मे दिखाई देता है। चित्र में पारंपरिक मेवाड़ शैली के साथ–साथ मुगल कला के प्रभावस्वरूप यथार्थता भी दिखाई देती है। जिस कारण चित्र मे रेखाएं कोमलता व लयात्मकता लिए हुए है। महाराणा अरिसिंह के मुखाकृति के पीछे सुनहरे रंग से सूर्य के समान आभा मण्डल को चित्रित कर उनकी महिमा मण्डन का प्रयास करते हुए इस शैली के चित्रकारों ने एक अति रोचक शिकार दृश्य का नमूना यहां पेश किया है।

चित्र सं. 2 महाराजा दशरथ का पुत्रेष्ठी यज्ञ सम्पन्न करके लौटते हुए।मेवाड़ चित्र शैली, संवत् 1706 (1649 ई. वी), चित्रकार,मनोहर

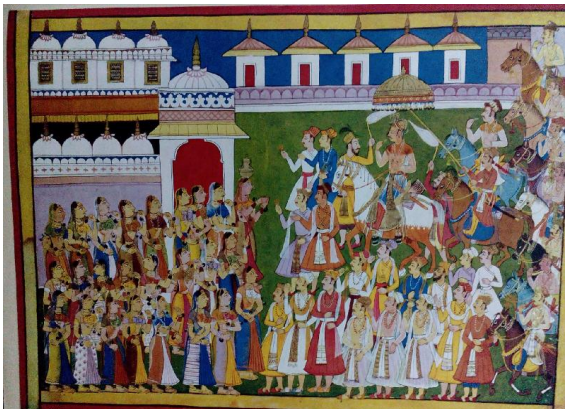

एक अन्य चित्र महाराजा दशरथ का पुत्रेष्ठी यज्ञ सम्पन्न करके लौटते हुए है। यह प्राचीन मेवाड़ चित्र शैली में निर्मित ''रामायण'' ग्रंथ का एक दृश्य चित्र है। इस चित्र में महाराजा दशरथ को पुत्र प्राप्ति की इच्छा हेतु पुत्रेष्ठी यज्ञ पूर्ण करके अपने प्रियजनों व राजसी ठाठ–बाट के साथ लौटते हुए दर्शाया गया है। वर्तमान में यह चित्र प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम बोम्बे में संग्रहित है। लिखित प्रमाणों के आधार पर यह चित्र संवत् 1706 (1649 ई.वी) में उदयपुर राज्य के मेदपाटन जगह पर्राजा जगत सिंह के समय में चित्रित किया गया है तथा चित्र पर चित्रकार का नाम मनोहर लिखा गया है।

इस चित्र में यज्ञ पूर्ण करके जब राजा दशरथ पुनः अपने महल में आते है उस समय उनका स्वागत उनकी रानियों तथा अन्य नारियों द्वारा महल के मुख्य द्वार पर किये जाने का मनोहारी चित्रण किया गया है। यह दृश्य महल के मुख्य द्वार के सम्मुख मुख करके खुले आंगन में चित्रित किया गया है। जो नारी आकृतियां राजा का स्वागत कर रही हैं उनमें प्रमुख आकृति ने एक पवित्र सुनहरे रंग का घड़ा अपने सिर पर धारण किया हुआ है। इस चित्र में आकृतियों की भरमार है। यह एक जुलूस सम्बन्धी चित्र है इसलिए यहां आकृतियां व्यवस्थित रूप में संयोजित की गई हैं। नारी आकृतियों को तीन कतारों में संयोजित किया है। वहीं दांयी ओर मध्य में राजा दशरथ को सफेद अश्व पर आरूढ़ तथा अन्य दरबारी साथियों व पैदल चालकों को उनके आस पास चित्रित किया गया है। चित्र के अंतिम छोर पर कुछ अश्वारोहियों को ऊपर से नीचे के क्रम में व्यवस्थित किया गया है। इन सभी व्यक्तियों को मेवाड़ के पारंपरिक पोषाक पहने दर्शाया गया है। यह चित्र मेवाड़ शेली की प्रमुख विशेषताओ जैसे उत्कृष्ट रंग संयोजन तथा चित्र की पृष्ठभूमि में विरोधी रंगों की पुनरावृत्ति आदि के द्वारा पूर्ण किया गया है। मुगल चित्रशैली का प्रभाव भी यहां मानवाकृतियां व वास्तुकला में स्पष्ट दिखाई देता है। 17वीं शताब्दी के मध्य में राजस्थानी चित्रकला में यहां की समृद्धि व वैभव को दर्शाना आवश्यक माना जाता था। चित्र में असंख्य चित्राकृतियों को बहुत ही प्रशंसनीय रूप से विभाजित किया गया है। अश्वाकृतियों की भी इस चित्र में भरमार

है। राजा दशरथ के अश्व को सफेद रंग में दर्शाया है जिसका नीचे का आधा भाग नारंगी रंग से निर्मित है। यह अश्व चित्र के मध्य स्थान में चित्रित है। इनके पीछे की ओर दो अन्य अश्व भी पूर्ण आकृति में चित्रित किये गये हैं। चित्रकार ने चित्र में तीन अश्वों को प्रमुख स्थान दिया है तथा कुछ अन्य शाही व्यक्तियों को उनके अश्वों के साथ चित्र के अंतिम छोर पर स्थान दिया है। जहां कुछ अश्वों को उनके कटी क्षेत्र तक ही चित्रित किया गया है। यह सभी अश्वों शाही दरबारियों के समूह के मध्य में चित्रित है जिससे कि चित्र में भीड़ का आभास हो सके। यह अश्व भी पारंपरिक मेवाड़ी वस्त्राभूषणों से सजा हुआ है। अश्व चित्रण में जहां विरोधी एवं चटकीले रंगों जैसे नीले, काले, भूरे, पीले, आदि का प्रयोग किया गया है तो वहीं कुछ अश्वों के मुख उनके अन्य शरीर की तुलना में पतलापन लिए हुए है जोकि मुगल व ईरानी कला के प्रभाव से इस शैली के चित्रों में आया है। पशु चित्रण में यहां चित्रकार की कुशलता दिखाई देती है। रेखाओं व मुख के भाव सजीवता व महीनता लिए हुए है। इस चित्र में प्राचीन कथाओं के अनुसार राजपूती शोभा यात्राओं के शान–वान की झलक दिखाई देती है।

चित्र सं. 3 अश्वारूढ़ महाराजा जवान सिंह का व्यक्ति चित्र, 1830ई.वी,मेवाड़ चित्र शैली

यह मेवाड़ चित्रशैली का ही एक व्यक्ति चित्र है जिसमें महाराजा जवान सिंह (1830 ई0) को अश्वारूढ़ चित्रित किया गया है। यह चित्र 19x13.2cm अपारदर्शी जल रंग व सुनहरे रंग के प्रयोग द्वारा निर्मित है। वर्तमान में यह ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में संग्रहित है। चित्र में महाराजा जवान सिंह (1828–38 ईस्वी) के व्यक्ति चित्र को मेवाड़ की पारंपरिक शाही वेशभूषा तथा व्यक्ति चित्रण के प्रमुख परम्परागत नियमों के आधार पर शाही लवाजमें के साथ चित्रित किया गया है।[8] चित्र में अश्वारोहित महाराणा के साथ पांच अन्य सेवकों को उनकी सवारी की अगुवाई करते चित्रित किया गया है। इस चित्र में जगत सिंह एक सफेद, मेवाड़ी अश्व पर आसीन है। यह अश्व शारीरिक रूप से बहुत ही हष्ट–पुष्ट है जो कि मेवाड़ी अश्वों की एक विशेषता भी है। चित्रकार ने सम्पूर्ण चित्र भूमि में अश्व को बहुत प्रमुखता के साथ केन्द्रिय स्थान दिया है।

अश्व चित्रण में यहांसफेद एवं नारंगी का प्रयोग किया गया है। वही अश्व को सुनहरे रंग के माध्यम से राजसी आभूषणों द्वारा अलंकृत किया गया है। ग्रीवा की झालरें, कर्ण के आभूषण, माथे की कलगी, पैरों के घुंघरू आदि सभी अति सूक्ष्मता के साथ में निर्मित किये गये है। यहाँ चित्रकार ने अश्व की मनःस्थिति को भी पूर्ण प्रमुखता दी है। उसके नाक, कान, आंख, मुख, दांत आदि सभी महत्वपूर्ण अंगों का अत्यंत ही उत्कृष्टता व बारीकी के साथ चित्रण इस चित्र में दिखाई देता है तथा अश्व भी यहां गतिमान अवस्था में चित्रित है। चित्र में उच्च परिप्रेक्ष्य के नियम का पालन किया गया है। सम्पूर्ण चित्र में सफेद, नारंगी तथा हरे रंग की अधिक प्रधानता है तथा अन्य चटकीले रंगों नीले, काले, सुनहरे रंगों के संयोजन से इसे पूर्णता प्रदान की गयी है। इस चित्र में मेवाड़ के व्यक्ति चित्रण की प्राचीन परंपरा निर्वाह हुआ है तथा चित्र संयोजन अपने पूर्ण विषय वैधिक्य को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है।

इस प्रकार इन चित्रों के अध्ययन से कहा जा सकता है कि मेवाड़ के चित्रकारों ने पशुओं के चित्रण को भी अपना मौलिक मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान किया है। चित्रकारों ने पशुओं को कहीं देवता माना है तो कहीं उनके व्यक्तिगत दुःख सुख की ओर भी उतना ही ध्यान केन्द्रित किया है। प्रत्येक स्थान पर बाह्य रूप में चाहे पशु को पशु रूप में ही दर्शाया गया हो किन्तु उन्हें मानवोचित गुणों, करूणा, सहानुभूति, प्रेम आदि से भी विभूषित किया गया है। धार्मिक, सामाजिक एवं व्यक्ति चित्रण से सम्बन्धित चित्रों में जहाँ कही भी पशुओं का अंकन हुआ है वहां उन्हें चित्र के वातावरण के अनुकूल अपनी मूक–भावना करूणा, स्नेह तथा सात्विकता से ओत–प्रोत दर्शाया गया है। वहीं युद्ध के चित्रों में अश्व युद्ध की भाव–भंगिमा स्वयं भी अनुकूल कर रहे हों ऐसा प्रतीत करते हुए दर्शाया गया है। चित्रकारों ने अपनी तुलिका के तनिक संचालन मात्र से उनकी आंख, गर्दन व कानों में इतना भाव डाला है कि चित्र में ये पशु मूक होते होते हुए भी मानो अपने भावों को पूर्ण रूप से व्यक्त कर रहे हों।[9] पशु चित्रण की यह समस्त विशेषताएं अश्व चित्रण में यथोचित परिपूर्ण होती दिखाई देती है। मेवाड़ शैली में समस्त अश्व चित्रों में उनके स्वभाव, मुद्रा, स्थिति, मनोभावों को बड़ी ही रोचकता के साथ चित्रित किया गया है। मेवाड़ी चित्रकारों ने अश्व को राजाओं और दरबारियों की शान मानकर एक राजसी स्वरूप प्रदान किया है और चित्रों में भी उन्हें कुशलता एवं कलात्मकता के साथ उचित स्थान प्रदान करते हुए कला धर्म व संस्कृति के साथ सुंदर सम्बन्ध दर्शाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जयसिंह नीरज : राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य,पटना,1976,पृ0 24–27*
2. *आर.ए.अग्रवाल : भारतीय चित्रकला का विकास, मेरठ, 1979, पृ0 60*
3. *गिर्राज किशोर अग्रवाल : कला और कलम, अलीगढ़ 1989–90, पृ0 187*

4. *डॉ.आर.के.वशिष्ठ : मेवाड़ की चित्रांकन परंम्परा, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर,1984,पृ0 58*
5. *सीटी पैलेस म्यूजियम उदयपुर, मेवाड़ स्कूल कला विथि।*
6. *Andrew Topsfield : The city palace Museum Udaipur Painting of Mewar Court Life, Ahmadabad, 1990, 54*
7. *Moti Chandra : Mewar Painting, Lalit Kala Akadami, India, 1957, Plate No. 2*
8. *Roda Ahluwalia : Rajput Painting,Mapin Publishing, Ahmadabad 2008, Plate No. 33, Page No. 64*
9. *डॉ.आर.के.वशिष्ठ : मेवाड़ की चित्रांकन परंम्परा, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर,1984,पृ0 53*